

करने के स्थान पर इसके संरक्षण का आह्वान करता है। ग्रह के संरक्षक के रूप में हमारी वरिष्ठत पत्थर की स्मारकों में नहीं बल्कि उस सद्भाव में अंकति है जिसमें हम संरक्षित रखते हैं, तथा एक ऐसे विश्व का निर्माण करते हैं जहाँ गरमा धूप वाले घास के मैदान में खलिने वाले जंगली फूलों की तरह खिलती है।

हम अपने दैनिक जीवन में न्याय, करुणा और प्रबंधन को अपनाते हुए अपने मूल मूल्यों को शामिल करें। ये मूल्य मार्गदर्शक सतारों की तरह कार्य करते हैं, जो हमें एक ऐसे विश्व की ओर ले जाते हैं जहाँ गरमा पनपती है, जो मानवता के सार को प्रतध्वनित करती है।

मूल्य केवल हमारे समाज के प्रतबिंब नहीं हैं, वे लक्ष्य हैं जो हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करने के लिये प्रेरित करते हैं। वे हमें स्वार्थ से परे जाकसत्य, ज्ञान और दयालुता के लिये प्रयास करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। हालाँकि इन आदर्शों तक पहुँचना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन वे जीवन को उद्देश्य देते हैं, और साथ ही प्रगत और नवाचार को बढ़ावा देते हैं। उद्देश्य हमें आगे बढ़ाता है, नवप्रवर्तन को प्रेरित करता है और हमें हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। हम वर्तमान को भविष्य से जोड़ते हैं, यह समझते हुए कि प्रगत एक सामूहिक प्रयास है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है।

संकट के समय, जैसे महामारी, प्राकृतिक आपदाएँ या सामाजिक उथल-पुथल के दौरान, अनश्चितता एवं प्रतकूल परस्थितियों के बीच मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ के रूप में मूल्यों का महत्त्व बढ़ जाता है। उदाहरण के लिये, **COVID-19 महामारी** ने वैश्विक चुनौतियों का सामना करने एवं सामूहिक लचीलेपन को बढ़ावा देने में एकजुटता, लचीलापन और करुणा जैसे मूल्यों के महत्त्व को रेखांकित किया।

संकट के समय में, जब अंधेरा मंडराता है और अनश्चितता बढ़ती है, तब मूल्य अटूट प्रकाशस्तंभ के रूप में चमकते हैं। वे केवल अमूर्त वचन नहीं हैं; वे तूफानों और अज्ञात रास्तों से हमारा मार्गदर्शन करने वाले सतार हैं।

एक समूह के रूप में एकजुट होने से हम अकेलेपन की दूरियों को दूर कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कई हाथों से बनाया गया पुल। इस एकता में शक्ति एवं लचीलेपन की प्रतध्वनित करती आवाजों का सामंजस्य पाया जा सकता है। हम स्वीकार करते हैं कि डर, सीमाएँ या वचनधाराएँ हमें हमारी साझा मानवता से अलग नहीं कर सकती। हम एक साथ खड़े हैं।

लचीलापन, एक **परवर्तनकारी ऊर्जा** है जो मानव जाति के सार से उत्पन्न होती है। यह राख से उभरने वाले फीनकिस की तरह है। यह थके हुए को हमित देता है, हमें चुनौतियों से बचने के स्थान पर उनका सामना करने के लिये प्रेरित करता है। आशा से प्रेरित होकर, हम अपने पंखों को सुधारते हैं और एक बार फिर ऊँची उड़ान भरते हैं, यह समझते हुए कि लचीलापन केवल एक व्यक्तिगत प्रयास नहीं है बल्कि दृढ़ता से बनी एक सामूहिक शक्ति है।

करुणा, मानवता के लिये आवश्यक एक अन्य आधारशिला है, जो एक सुखदायक वर्षा के समान है जो हमारी आत्मा को तृप्त कर देती है। यह उन गुणनाम नायकों में व्याप्त होता है जो हमारी सहायता करते हैं - नर्सों, शिकषक और पड़ोसी। हम डर के कारण नहीं, बल्कि एकता के कारण अपने हाथ बढ़ाते हैं, यह पहचानते हुए कि **करुणा कमजोरी का प्रतीक नहीं है, बल्कि साहस का स्रोत है।**

उथल-पुथल के बीच, हम आगे बढ़ने के अपने रास्ते को पहचानते हैं, अपने नैतिक दिशा-निर्देश को उन मूल्यों के साथ संरेखित करते हैं जो परभाषित करते हैं कि मानवता को क्या होना चाहिये। कोविड-19 महामारी एक नरिणायक क्षण के रूप में सामने आई है, जो हमारी सामूहिक चेतना पर इन सबकों को अंकित करती है, हमारे कार्यों और नरिणयों को नरिदेशित करने में मूल्यों की अनविद्यता को रेखांकित करती है।

अपने अंतर्नहित महत्त्वके बावजूद, मूल्यों को वर्तमान की जटिल और परस्पर संबद्ध विश्व में प्राय: विकराल चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। **भौतिकवाद, व्यक्तिवाद** तथा **नैतिक सापेक्षवाद** की शक्तियाँ पारंपरिक मूल्यों एवं नैतिक मानदंडों को नष्ट कर सकती हैं, जिससे सामाजिक मतभेद और नैतिक भ्रम उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त, **वैचारिक संघर्ष एवं सांस्कृतिक विभाजन कुछ मूल्यों की सार्वभौमिक स्वीकृति में बाधा** उत्पन्न कर सकते हैं, तथा अन्याय और असमानता को बढ़ावा दे सकते हैं।

भौतिक संपदा एवं संपत्तिका आकांक्षाएँ असंतोष की भावना की ओर ले जाती है। इसे संबोधित करने के लिये, व्यक्तिभौतिक संघर्ष के स्थान पर **कृतज्ञता, उदारता और उद्देश्यपूर्ण जीवन** जैसे मूल्यों को प्राथमिकता दे सकते हैं। समाज ऐसी नीतियों और पहलों को बढ़ावा दे सकता है जो विशुद्ध आर्थिक संकेतकों के स्थान पर कल्याण के साथ-साथ सफलता के समग्र उपायों पर जोर देती हों।

जबकि व्यक्तिगत महत्त्वपूर्ण है, व्यक्तिगत स्वायत्तता पर अत्यधिक ध्यान **सामाजिक वखंडन** और **अलगाव** को जन्म दे सकता है। समुदायिक भावना के साथ व्यक्तिगत को संतुलित करने के लिये **सहानुभूति, सहयोग एवं सामाजिक उत्तरदायित्व** को बढ़ावा देना आवश्यक है। यह उन पहलों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो **समावेशिता, सहानुभूति निर्माण** एवं **सामुदायिक सहभागिता** को बढ़ावा देते हैं।

गहरी जड़ें जमा चुके **वैचारिक विभाजन समाज की प्रगत और सहयोग में बाधा** उत्पन्न सकते हैं। सामान्य आधार ढूँढने और इन विभाजनों को पाटने के लिये सक्रिय रूप से सुनने, सहानुभूति और रचनात्मक वार्ता में शामिल होने की इच्छा की आवश्यकता होती है। **न्याय, करुणा एवं मानवीय गरमा के प्रत सम्मान** जैसे साझा मूल्यों पर जोर देने से आपसी समझ और मेल-मिलाप को बढ़ावा देने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

"मूल्य वे नहीं जो मानवता है बल्कि वे हैं जैसा मानवता को होना चाहिये" कथन एक **शक्तिशाली दृष्टिकोण** प्रदान करता है जिसके माध्यम से हमारी सामूहिक एवं व्यक्तिगत यात्रा की जाँच की जा सकती है। यह मानव प्रकृति की जटिलताओं को पहचानता है और साथ ही हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास के लिये मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में मूल्यों की परवर्तनकारी शक्ति को उजागर करता है। इस सतत् प्रक्रिया को अपनाना, उन मूल्यों द्वारा नरिदेशित जिनमें हम प्रयत्न मानते हैं, अंततः यह परभाषित नहीं करता कि हम कौन हैं, बल्कि यह कि हम क्या बनना चाहते हैं - एक ऐसा समुदाय जो अधिक न्यायपूर्ण, दयालु एवं समतापूर्ण विश्व के निर्माण की ओर प्रयास कर रहा है। वास्तविकता एवं आदर्श के बीच के अंतर को पहचानकर और साथ ही इस अंतराल की समाप्ति हेतु नरितर प्रयास करके, हम मानवता की एक समृद्ध चरित्रपट नरमित कर सकते हैं, एक ऐसा चरित्रपट जो अपनी पूर्ण क्षमता तक पहुँचने के लिये नरितर रूपांतरित होता रहता है।

????? ?? ?????? ?????????????? ???, ??????????? ?????? ??????
????? ?????????? ??????? ?????? ?? ???????

— ?????? ??????

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/values-are-not-what-humanity-is-but-what-humanity-ought-to-be>

